REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

चंपारण सत्याग्रह में गुजरात की भूमिका

डा.मयंक टी. बारोट
इतिहास विभाग, श्री बी.डी.अेस. आर्टस, सायन्स एन्ड कोमर्स कोलेज, पाटण.

सारांश :

विरम गाम की जकात बारी दूर होने के समाचार गाँधीजी की गोधरा की १९१७ की उनकी प्रमुख पद पर मिलेली पहली गुजरात राजकीय परिषद के योग्य स्थान पर मिले थे। यह विजय गाँधीजी अहमदाबाद में आश्रम बनाकर स्थिर हुए उस पहले प्राप्त हुए उस के बाद कोचरब में जीवणलाल बेरिस्टर के मकान को किराये पर रखकर वहाँ आश्रम शुरु किया लेकिन गाँधीजी के आश्रमी जीवन के ख्याल के मुताबिक खुदमहेनत सर्वधर्म समभाव व्रतमय जीवन आदि उनके आश्रमवासीयों के लिए सहज थे। गाँधीजी बचपन से ही अस्पृश्यता की हिन्दु धर्म के कलंक गीनते थे और इसीलिए कोचरब में आश्रम शुरु किया तब गाँधीजी के जातमहेनत के कामो से लोगों को आश्चर्य हुआ लेकिन जब अस्पृश्यों आश्रम में दाखिल हुए तब पहले तो बहोत विरोध हुआ दुदाभाई और उनके कुटुम्ब हरिजन थे और उन्होंने आश्रम में जोडने की इच्छा बताई तब गाँधीजी ने उनको आवकारा। यह होते ही हिंदुओने आश्रम में सहाय बंद कर दी और आश्रमवासीओ को नजदीक के कुए से पानी लेना भी भारी पड गया। आश्रम चलाने के लिए पैसों की कमी होनी लगी लेकिन अचानक शहर के जानकार शेठ अंबालाल साराभाई आकर गाँधीजी को तेर हजार रुपयों की भेंट देकर चले गये। गाँधीजी ने माना की शामणा भगवान ने यह प्रसंग में भेज दी। इसीलिए गाँधीजी हिंन्दु धर्म और समाज अँग्रेजी क्राँन्तिकारी और सत्याग्रही पगला सफल हुआ। धीरे धीरे लोगों में हरिजनो को देने की प्रवृत्ति तेज बनती गई और एक दायके के बाद तो गाँधीजी ने हरिजन प्रवृत्ति बडे पाये पर चलाने हिन्दु धर्म और समाज की सेवा करने में अच्छी तरह से सफल हुआ था। इस तरीके से १९१७ में गाँधीजी अपने आश्रमवासीओं को कोसते और समाजको अहिंसक आँचका देते और सत्याग्रह के लिए सही वातावरण तैयार कर रहे थे।

❊ प्रस्तावना :

गुजरात में गाँधीजी आश्रमी जीवन से सामाजिक सत्याग्रह का वातावरण तैयार कर रहे थे। उस अरसे में उनको लखनौ के काँग्रेस अधिवेशन में जाना हुआ और वहाँ उनकी बिहार के चंपारण खेडूत राजकुमार शुक्ल मील गये। चंपारण विभाग के राजकुमार शुक्ल सामान्य खेडुत थे लेकिन उनको गली के वावेतर के बारे में बहोत कष्ट उठाना पडा। चंपारणमें ‘‘तीन फाकिया’’ की प्रथा रुढ हुई थी वहाँ के खेडूत जमीनदारो के साथ कानून के ऐसे बंधे हुए थे की खेडूतो की एक एकर के २०% में से १% में गली का वावेतर फरजियात करना पडा। जमोन मालिकों में ज्यादा गोरे लोग थे यह रीवाज से खेडूतो को बहोत सहन करना पडा था। राजकुमार ने देख लीया था की उनका दुःख सहे ऐसे तो गाँधीजी है इसीलिए लखनौ काँग्रेस से गाँधीजी का पीछा पकडा और आखिर गाँधीजी को पूरा केस समझाने पटना में राजेन्द्र बाबु के वहाँ ले गए। स्वराज के बाद पहला राष्ट्रपति बननार राजेन्द्रबाबु उस वक्त पटना में वकिलात करते थे। गाँधीजी वहाँ से मुझफकपुर गए वहाँ कृपलानीसे पहली बार मिलकर वह कृपलानी के ही आचार्य कुपलानीने गाँधीजी को खेडूतों की दूर्दशा का बहोत ख्याल दिया। दूसरे दिन स्थानिक खेडूत मंडल गाँधीजी को मिला। गाँधीजीने किशोर बाबु और अन्य वकीलो को स्पष्ट

बताया की सिफ केस करने से यह प्रश्न का निकाल आनेवाला नहीं। गाँधीजी ने वकील दोस्तो को जेल जाने तक की बात की और सभी ने इसे स्वीकार कर लिया। गाँधीजीने देख दिया कि गली की लडत एक-दो साल तक चलेगी। इस तरीके से गाँधीजी चंपारण लडत में अपने आप की घुसते गये। जैसे जैसे लडत आगे चलती गई वैसे वैसे गाँधीजीने अपने आश्रमवासीयों को भी उस में रोकने लगे। इस तरह गुजरात में चंपारण लडत का काम हआ और राष्ट्र एक ही है। यहाँ सभी प्रांच ऐक ही हिंदी राष्ट्र क अविभाज्य अंग है।

खेडा के खेडूत सत्याग्रह की लडतने एक नये ही और मुश्किल सफल प्रवेश कर विजय हांसिल किया। सही हकीकत तो यह है कि यह छोटे-बडे अलग-अलग प्रकार के सत्याग्रह के वक्त गाँधीजो और उनके साथीयोंने सरकारी उनके युध्ध प्रयासों में पूरी मदद करके एक ही समय पर सहकार और असहकार करने की बात नयी थी। सत्याग्रह में उनके पीछे की उत्तम और अहिंसक भावना के कारण यह करना शक्य बन शका है। भारत की जनता की उदार भावना को समझना बहुत कठीन न था और एक ही साथ सरकार के साथ सहकार और असहकार करने की दो गुनी और परस्पर विरोध बताने की प्रवृत्ति बताई। खेडा के सत्याग्रह को ऐसे विविध प्रयास पर महोर मार कर खेडा की लडत चल रही थी उस वक्त कमिश्नरने खेडूतो की सभा सत्याग्रही कार्यकर्ताओं के साथ की। उस वक्त कमिश्नरने खेडूतो को धमकी दी फिर भी खेडूतो ने उनका अपमान किये बगैर उनको सम्मानपूर्वक सचोट उत्तर दिया और उनके शांत, सौम्य और खमीर के दर्शन दिये। खेडा सत्याग्रहने सरकार के जुल्मो को शांतिमय सामना करके खेडूतो की अहिंसक शक्ति का भी अनुभव दिया। हिंद में यह प्रथम खेडूत सत्याग्रह था। चंपारण सत्याग्रह खेडूतो के लिए था लेकिन उसमें खेडूतो का सीधा हिस्सा लेकर सरकार का अहिंसक सामना किया और उत्तम उदाहरण देश के सामने रखा। यह पहला खेडूत सत्याग्रह न था लेकिन दुनियाभरमें खेडूतो की एक नयी प्रकार की लडत बनी रही।

डा.मयंक टी. बारोट
इतिहास विभाग, श्री बी.डी.अेस. आर्टस, सायन्स एन्ड कोमर्स कोलेज, पाटण.

LBP PUBLICATION